

**चढ़वाना** स.क्रि. (देश.) चढ़ाने का काम करना।

**चढ़ाई स्त्री.** (देश.) 1. चढ़ने की क्रिया या भाव 2. ऊँचाई की ओर जाने वाली (जाती) भूमि प्रयो. पहाड़ की चढ़ाई बहुत कठिन है।

**चढ़ाना** स.क्रि. (देश.) 1. नीचे से ऊपर ले जाना, उच्च स्तर या ऊँचाई पर पहुँचाना प्रयो. इस सामान को छत पर चढ़ाना उचित रहेगा 2. चढ़ने का काम कराना प्रयो. बच्चे को पेड़ पर चढ़ाना ठीक नहीं, कहीं गिर न पड़े।

**चढ़ानी स्त्री.** (देश.) 1. ऊँचाई की ओर ले जाने वाली सतह या उत्तरोत्तर ऊँची होती गई जमीन।

**चढ़ाव** पुं. (देश.) 1. चढ़ने का भाव 2. बढ़ने का भाव, वृद्धि, बढ़ोतरी प्रयो. नदी के जल स्तर का चढ़ाव देखकर पार करने का प्रयास करना।

**चढ़ावा** पुं. (देश.) 1. दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के अवसर पर चढ़ाए जाने या पहनाए जाने वाला गहना 2. वह सामग्री जो देवता को अर्पित की जाए या देवता पर चढ़ाई जाए, 'पुजापा' 3. चौराहे पर टोटके के रूप में रखी जाने वाली सामग्री।

**चढ़ैत** पुं. (देश.) चढ़ने वाला, सवार होने वाला।

**चढ़ैता** पुं. (देश.) दूसरों के घोड़ों को फिराने अथवा प्रशिक्षित करने वाला, चाबुक सवार।

**चढ़ौवाँ (चढ़ौआ)** पुं. (देश.) चढ़ैमा (ब्रज.) उठी हुई एड़ी का जूता।

**चण** पुं. (तत्.) चना।

**चणक** पुं. (तत्.) 1. एक गोत्रकार-ऋषि 2. चना।

**चणिया** स्त्री. (देश.गुज.) एक घास जिसके खाने से गाय अधिक दूध देती है 2. यह घास दवा के काम में भी आती है।

**चणिमा** पुं. (तत्.) एक छोटा लहंगा या घाघरा।

**चतरना** अ.क्रि. (देश.) छितरना, बिखरना।

**चतरभंग** पुं. (तद्.) बैलों में पाया जाने वाला एक दोष जिसमें उसके डिल्ले (टाठ) का मांस एक ओर लटक जाता है टि. इस दोष वाले बैल को

पालना या रखना पालक परिवार के लिए हानिकारक या अशुभ माना जाता है।

**चतराना** अ.क्रि. (देश.) छितराना।

**चतस्र** पुं. (तत्.) चार।

**चतुःशाल** पुं. (तत्.) 1. वह मकान जिसमें चार बड़े-बड़े कमरे हों 2. चौपाल, बैठक, दीवानखाना।

**चतुःषष्ठ** वि. (तत्.) चौंसठवाँ।

**चतुःसंप्रदाय** पुं. (तत्.) वैष्णवों के चार प्रधान संप्रदाय- श्री, माध्व, रुद्र और सनक।

**चतुःसन** पुं. (तत्.) ब्रह्मा के चार पुत्र- सनक, सनंदन, सनातन और सनत्कुमार, ये विष्णु के अवतार माने जाते हैं।

**चतुर्मूर्ति** पुं. (तद्.) 1. ईश्वर 2. विष्णु 3. ब्रह्मा 4. जो चारों अवस्थाओं, ('विराट्', 'सूत्रात्मा', 'अध्याकृत' और 'तुरीय') में रहता हो, परमात्मा।

**चतुरंग** पुं. (तत्.) 1. सरगम, तराना, तबला, मृदंग आदि के बोलों को बैठाकर गाए जाने वाला गाना 2. चतुरंगिणी (हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल) सेना का (प्राचीनयुगीन) प्रधान अधिकारी 3. शतरंज का खेल 4. चतुरंगिणी सेना वि. चार अंगों (पैदल, रथ, हाथी और घोड़ा) वाला।

**चतुरंगिणी** वि. (स्त्री.) चार अंगों वाली स्त्री. (तत्) चार अंगों वाली सेना।

**चतुर** वि. (तत्.) 1. टेढ़ी चाल चलने वाला, वक्रगामी 2. फुरतीला (स्फूर्त) 3. तेज़ 4. प्रवीण, होशियार, निपुण 5. धूर्त, चालाक 6. कार्य कुशल 7. सुंदर 8. चार पुं. (तत्.) 1. शृंगार रस में नायक का एक भेद, क्रिया चातुर्य और वचन चातुर्य के द्वारा प्रेमिका से संभोग करने वाला नायक 2. वह स्थान जहाँ हाथी रहते हों, हाथीखाना 3. नृत्य में एक प्रकार की चेष्टा या हावभाव 4. चार की संख्या 5. वक्रगति (टेढ़ी चाल) 6. धूर्तता, प्रवीणता, होशियारी 7. गोल तकिया।

**चतुरक्रम** पुं. (तत्.) एक प्रकार की ताल जिसमें दो गुरु, दो प्लुत और इसके बाद एक गुरु होता है, यह बल्लीस अक्षरों की होती है, इसका व्यवहार शृंगार रस में होता है।